International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-05-2022, Accepted: 05-06-2022, Published: 21-06-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 53-55

भदन्त आनन्द कौसल्यायन का अनुवाद कर्मः डॉ. आम्बेडकर की कृतियों के विशेष सन्दर्भ में

प्रियंका गौतम
शोधार्थी, हिन्दी अनुवाद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
अनुवाद हमेशा से ज्ञान के विभिन्न माध्यमों को आपस में जोड़ने का कार्य करता रहा है। इस परम्परा की भव्यता से सामाजिक चेतना को उन्नत बनाने में कई श्रेष्ठ अनुवादकों का विशेष योगदान रहा है, जिन्होंने अपने अनुवाद कर्म द्वारा समाज को ना केवल दूसरी संस्कृतियों से परिचित कराया, अपितु सामाजिक चेतना के प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। भन्दत आनन्द कौसल्यायन उन्हीं महान अनुवादकों में से एक हैं। वे एक महान लेखक, प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक, समाज सुधारक, पालि तथा सिंहली भाषा के मूर्धन्य विद्वान तथा एक महान अनुवादक हैं। उनका नाम बीसवीं सदी के सबसे सक्रिय व्यक्तियों में गिना जाता है। उन्होंने अनेक रचनाकारों की रचनाओं के अनुवाद किए। उन्होंने डॉ. भीमराव आम्बेडकर की भी कई कृतियों का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया। इस शोध आलेख में आनन्द कौसल्यायन द्वारा डॉ. आम्बेडकर की कृतियों के हिन्दी अनुवादों और उनके सामाजिक सरोकारों पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्दः बौद्ध साहित्य, दलित साहित्य, डॉ. आम्बेडकर, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, अनुवाद

प्रस्तावना
हिन्दी और पालि साहित्य जगत में भन्दत आनन्द कौसल्यायन के नाम से सभी भली–भांति परिचित हैं। वे एक लेखक होने के साथ–साथ एक कुशल अनुवादक भी थे, जिन्होंने साहित्य सृजन तथा अनुवाद कर्म के माध्यम से लोगों में धार्मिक और सामाजिक चेतना जागृत करने का कार्य किया। उन्होंने पालि, सिंहली तथा अंग्रेजी के विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों के अनुवाद हिन्दी भाषा में किए। डॉ. भीमराव आम्बेडकर के अंग्रेजी में लिखे कई ग्रन्थों का उन्होंने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया। भगवान बुद्ध और उनका धम्म (Buddha and his Dhamm), हिन्दू धर्म की रिडल (Riddles in Hinduism), अछूत कौन और कैसे (The Untouchables: Who were they and why they became untouchables) और डॉ. भीमराव आम्बेडकर के भाषण (Thus Spoke Ambedkar) डॉ. आम्बेडकर की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं, जिन्हें हिन्दी पाठकों तक पहुँचाने का श्रेष्ठ कार्य भन्तेजी ने किया।

शोध आलेख
अनुवाद कर्म के पीछे अनुवादक के कुछ विचार, कुछ उद्देश्य होते हैं। डॉ. आम्बेडकर की कृतियों के अनुवाद के पीछे भदन्त आनन्द कौसल्यायन के भी उद्देश्य थे, जिन्होंने उन्हें अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया। भन्तेजी अपने मौलिक और अनूदित साहित्य के माध्यम से समाज में समता स्थापित करना चाहते थे। उनका मानना था कि भारत के बहुसंख्यक समाज में व्याप्त जो जाति–पाँति की प्रथा है, वह एक सामाजिक कोढ़ है और उसी की शव परीक्षा करना आज दिन समाज के हर शुभचिन्तक का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। भदन्त आनन्द कौसल्यायन द्वारा अनूदित भगवान बुद्ध और उनका धम्म , हिन्दू धर्म की रिडल, अछूत कौन और कैसे, डॉ. भीमराव आम्बेडकर के भाषण ऐसी ही कृतियाँ हैं, जिन्होंने समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. आम्बेडकर स्वतन्त्र भारत के संविधान निर्माता, दलितों के मसीहा, समाज सुधारक और एक राष्ट्रीय नेता थे। दलित जाति में जन्म लेने के कारण उन्हें सामाजिक भेदभाव, छूआछूत और अपमान की जो यातनाएँ सहनी पड़ीं, उन्हीं के कारण वे उस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए संकल्पित हो गए। उन्होंने अपने क्रांन्तिकारी विचारों द्वारा उच्चवर्गीय मानसिकता को कड़ी चुनौती दी। उन्होंने दलित और निम्न वर्ग के लोगों के लिए ऐसे महान कार्य किए, जिनके कारण उन्हें ना केवल सारे भारतीय समाज में बल्कि सम्पूर्ण संसार में गौरव प्राप्त हुआ। अतः ऐसी कृतियों को देश के हर कोने तक पहुँचाना समय की माँग थी, जिसका जिम्मा भन्तेजी ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने बाबासाहेब आम्बेडकर की कृतियों का इसलिए चुनाव किया क्योंकि वे उस समय की धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर लिखी गई थीं।

भगवान बुद्ध और उनका धम्म डॉ. भीमराव आम्बेडकर कृत Buddha and his Dhamma का हिन्दी अनुवाद है। यह अनुवाद भदन्त आनन्द कौसल्यायन द्वारा सन् 1961 में हिन्दी भाषा में किया गया। मूल रचना अंग्रेजी भाषा में सन् 1957 में छपी। यह बौद्ध धर्म की एक उत्कृष्ट रचना है और बौद्ध धर्म की बाइबिल के रूप में विख्यात है। हिन्दुओं की रामायण, मुसलमानों की कुरान, ईसाइयों की बाइबिल तथा सिखों के गुरू ग्रन्थ साहिब के समान इसे भी बौद्ध धर्म का एक पवित्र धम्म–ग्रन्थ माना जाता है। इस ग्रन्थ के अनुवाद के पीछे डॉ. कौसल्यायन का प्रयोजन भगवान बुद्ध के जीवन और व्यक्तित्व का एक विश्लेषणात्मक प्रतिपादन हिन्दी भाषी लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना था। इसके द्वारा उन्होंने बौद्ध धर्म की पुनर्व्याख्या करके यह दिखाने का प्रयास किया है कि बौद्ध धर्म में वे सारी क्षमताएँ व्याप्त हैं जो आधुनिक संसार की

समस्त जरूरतों को पूरा कर सकती हैं। इसके माध्यम से वे बुद्ध के सामाजिक उपदेशों से सामान्य जनता को रूबरू कराना चाहते थे।

हिन्दू धर्म की रिडल डॉ. भीमराव आम्बेडकर की रचना Riddles in Hinduism का सन् 1988 में किया गया हिन्दी अनुवाद है। आम्बेडकर के जीवनकाल में यह पुस्तक प्रकाशित ना हो सकी, बल्कि अनकी मृत्यु के बाद सन् 1987 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित किया गया। यह अपने समय की सबसे चर्चित रचनाओं में से एक है। इस ग्रन्थ में भारतीय समाज विशेषकर हिन्दू समाज से सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं अथवा पहेलियों को सुलझाने की कोशिश की गई है। धर्म और धार्मिक परम्पराओं से जुड़ी पहेलियों को सुलझाना किसी भी बुद्धिजीवी के लिए बहुत ही मुश्किल होता है। बाबासाहेब आम्बेडकर का कहना था कि भारतीय समाज का ताना–बाना अभी जाति व्यवस्था पर आधारित है और भारतीय समाज के विभिन्न स्तरों में परिवर्तन का निर्धारण भी जाति के आधार पर होता है। प्रत्येक हिन्दू जिस जाति में जन्म लेता है, उसकी वह जाति ही उसके धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक जीवन का निर्धारण करती है। यह स्थिति माँ की गोद से लेकर मृत्यु की गोद तक रहती है। भन्दत आनन्द कौसल्यायन ने हिन्दू धर्म की रिडल में हिन्दू धर्म से जुड़ी ऐसी मिथ्यापरक मान्यताओं को अनुवाद के माध्यम से लोगों के सामने रखा।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन द्वारा जिस समय इस ग्रन्थ का अनुवाद किया गया, उस समय देश को आज़ाद हुए 40 वर्ष से अधिक समय हो गया था। ये वही भारत था जिसकी आज़ादी का सपना बाबासाहेब आम्बेडकर ने भी देखा था और भन्तेजी ने भी। फिर वो कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने भन्तेजी को इस रचना का अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया। भन्तेजी ने देश की ऐसी आज़ादी की कल्पना नहीं की थी और ना ही आम्बेडकर ने। देश तो अभी भी दास था, अंग्रेज़ों का नहीं बल्कि सामाजिक बुराइयों का, छूआछूत का, शोषण का, असमानता का। हिन्दू समाज में धार्मिक क्रियाकलापों और धार्मिक ग्रन्थों के नाम पर भोली–भाली जनता का शोषण हो रहा था। अतः इस ग्रन्थ का अनुवाद करके लोगों में धार्मिक चेतना विकसित करना ही भदन्त आनन्द कौसल्यायन का उद्देश्य था।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने इस ग्रन्थ का अनुवाद हिन्दू समाज को पथ–भ्रष्ट रास्ते से वापस लाने की दृष्टि से किया। इसका अद्देश्य ब्राह्मणों द्वारा बनाए गए नियमों और आडम्बरों से लोगों को रूबरू कराना तथा ब्राह्मणों द्वारा प्रतिपादित विश्वासों का पर्दाफाश करना था। बाबासाहेब ने यह ग्रन्थ सर्वमान्य हिन्दुओं के लिए लिखा था ताकि वे जाग जाएँ और देखें कि ब्राह्मणों ने उन्हें किस गोरख धन्धें में फँसा रखा है। यह पुस्तक लोगों को बुद्धिवादी चिन्तन की सड़क पर आगे बढ़ाने के लिए लिखी गई थी। आनन्द कौसल्यायन ने भी माना कि यह ग्रन्थ 'रिडल्स' हिन्दुओं और गैर–हिन्दुओं दोनों के लिए ही बड़े काम का ग्रन्थ है। जैसे आईने में किसी को अपना चेहरा साफ–साफ दिखाई देता है, वैसे ही हिन्दू भाइयों के लिए यह ग्रन्थ एक आइने का काम देगा।

आनन्द कौसल्यायन ने इस ग्रन्थ में निहित क्रान्तिकारी विचारों को अनुवाद के माध्यम से दूर–दूर तक पहुँचाया है। उन्होंने इस ग्रन्थ की भूमका में लिखा है कि अंग्रेजी में लिखा–छपा होने से यह ग्रन्थ सामान्य जनों तक नहीं पहुँच सकता है, सोच इन रिडल्स को हिन्दी जामा पहना दिया गया है। मूल अंग्रेजी के ऐसे उद्धरणों को जिनकी पुनरूक्ति हुई है, इस अनुवाद में एकदम छोड़ दिया गया है, उनके महत्त्वपूर्ण अंशों का ही अनुवाद में समावेश कर लिया गया है। यह हिन्दी अनुवाद मूल अंग्रेजी पुस्तक के समान बोझिल नहीं हो रहा है। अब इसके सभी परिच्छेद देखने में छोटे लगते हैं, किन्तु भाव की गम्भीरता में कोई अन्तर नहीं पड़ा है।

अछूत कौन और कैसे बाबासाहेब आम्बेडकर की रचना 'The Untouchables: Who were they and why they became untouchables' का हिन्दी अनुवाद है। भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने यह अनुवाद सन् 1949 में हिन्दी भाषा में किया। साहित्य किसी भी समाज का आइना होता है। यह रचना भी समकालीन समय का यथार्थ वर्णन करती है। मैनेज़र पाण्डेय के शब्दों में– "साहित्य रचना एक सामाजिक कर्म है और कृति एक सामाजिक उत्पादन, लेकिन साहित्य की रचना एक व्यक्ति करता है इसलिए समाज से साहित्य के सम्बन्ध को समझने के लिए समाज से रचनाकार व्यक्ति के ठोस ऐतिहासिक सम्बन्ध की समझ आवश्यक है। जिसे आसमाजिक या व्यक्तिवादी साहित्य कहा जाता है उसका भी समाज से एक तरह का सम्बन्ध होता है"। 'अछूत कौन और कैसे' भी ऐसी ही एक रचना है जो समाज और देश को यह सोचने पर मज़बूत कर दे जिस व्यवस्था में वे रह रहे हैं, क्या वह अनुकरणीय है?

इस ग्रन्थ के अनुवाद के माध्यम से कौसल्यायन हिन्दू समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, छुआछूत, धार्मिक साम्प्रदायिकता जैसी सामाजिक करीतियों के प्रति लोगों को सचेत करना चाहते थे। उन्होंने जिस समय इस कृति का अनुवाद किया, वे उस समय की माँग था। समाज में व्याप्त अत्याचार, शोषण, छुआछूत, अन्धविश्वास, ब्राह्मणवाद, आडम्बरों के प्रति लोगों को सचेत करने के लिए ये आवश्यक था कि इस तरह की रचनाओं के अनुवाद किए जाएँ। उनके द्वारा अनूदित ये कृति वर्तमान परिस्थितियों में भी उतनी ही प्रासंगिक है। आज भी देश वर्ण व्यवस्था, छुआछूत, धार्मिक साम्प्रदायिकता जैसी परिस्थितियों से गुजर रहा है। ऐसी दशा में समाज को आइना दिखातीं इस तरह की रचनाओं का अनुवाद और भी आवश्यक है।

आम्बेडकर के भाषण, भाग–1 अंग्रेजी की पुस्तक (Thus Spoke Ambedkar) का भन्तेजी द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद है। यह ग्रन्थ डॉ. आम्बेडकर के भाषणों का सकंलन है। इसमें उनके द्वारा विभिन्न विषयों पर दिए गए भाषणों को सम्मिलित किया गया है। इस पुस्तक के अनुवाद का उद्देश्य बाबासाहेब के क्रान्तिकारी विचारों को हिन्दी भाषी लोगों तक पहुँचाना था। इसका अनुवाद करके भदन्त जी ने बाबासाहेब के देश, जाति, शिक्षा, राजनीति, गरीबी आदि महत्वपूर्ण विषयों पर दिए गए भाषणों को आम जनता तक पहुँचाकर हिन्दी भाषी लोगों को उपकृत किया है।

आम्बेडकर के भाषण ग्रन्थ में देश और राजनीति से जुड़े अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें 1930-31 की गोलमेज कॉन्फेंस में दिया गया वक्तव्य है जो भारत की स्वतन्त्रता और दलित वर्ग के राजनैतिक अधिकारों के विषय में है। दलितों की स्थिति को सम्बोधित करते हुए वे अपने भाषण में कहते हैं– "उन्हें (दलितों) दासों का दर्जा प्राप्त है, यह भी कहा जा सकता है। भेद इतना है कि दास अस्पृश्य नहीं रहे। यह सारा दलित वर्ग अस्पृश्य है"। इसमें उन्होंने ब्रिटिश शासन पर भी कड़ा प्रहार किया है। भदन्त कौसल्यायन द्वारा अनूदित इस पुस्तक में बाबासाहेब द्वारा गोलमेज कॉन्फेंस में

दिया गया वक्तव्य है। इसका उद्देश्य भारत की स्वतन्त्रता और दलित वर्ग के राजनैतिक अधिकारों के विषय में बाबासाहेब के विचारों से लोगों को परिचित कराना था। दलितों की स्थिति को सम्बोधित करते हुए मूल पुस्तक में लिखा है–

"Position assigned to the Depressed Classes is totally different- It is one which is midway between that of the serf and the slave] and which may] for convenience] be called servile&&&with this difference that the serf and slave were permitted to have physical contact] from which the Depressed Classes are debarred."

इसका अनुवाद भन्तेजी ने इस प्रकार किया है

"दलित वर्ग को जो दर्जा प्राप्त है, वह इससे सर्वथा भिन्न है। उसका स्थान कुध–कुछ डांगर चराने वाले खेतिहर और गुलाम के बीच का सा है। उन्हें (दलितों) दासों का दर्जा प्राप्त है, यह भी कहा जा सकता है। भेद इतना है कि दास अस्पृश्य नहीं रहे। यह सारा दलित वर्ग अस्पृश्य है"।

इसके अनुवाद का उद्देश्य था आम जनता को यह दिखाना कि उनका शोषण केवल ब्राह्मणों और पुरोहितों द्वारा ही नहीं किया गया बल्कि ब्रिटिश शासकों का भी इसमें पूरा सहयोग रहा है। दलितों की जो स्थिति अंग्रेजों के भारत आने से पहले थी, वही स्थिति आज भी है। बाबासाहेब ने कॉफ्रेंस में दलितों को राजनीतिक अधिकार देने की अपील की। डॉ. आम्बेडकर के प्रयासों से हिन्दी भाषी जनता को रूवरू कराने का श्रेय भदन्त जी को जाता है।

निष्कर्ष

भदन्त आनन्द कौसल्यायन लोगों में सामाजिक चेतना जागृत करना चाहते थे और शायद इसीलिए वे बाबासाहेब आम्बेडकर की कृतियों के अनुवाद की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने अपने साहित्य तथा अनुवाद कर्म के माध्यम से धर्म के नाम पर किए जाने वाले शोषणों का विरोध किया; समाज सुधारक बनकर समाज में एकता स्थापित करने का प्रयास किया। इस तरह समाज और समाज के लोगों के प्रति सेवा का भाव ही उन्हें बाकी अनुवादकों से अलग बनाता है।

संदर्भ

1. कौसल्यायन, डॉ. भदन्त आनन्द (अनु), अछूत कौन और कैसे (डॉ. बी.आर. आम्बेडकर), दिल्ली, गौतम बुक डिपो, 1949, मुद्रित
2. कौसल्यायन, डॉ. भदन्त आनन्द (अनु), हिन्दू धर्म की रिडल (डॉ. बी.आर. आम्बेडकर), दिल्ली, गौतम बुक सेंटर, 2019, मुद्रित
3. कौसल्यायन, डॉ. भदन्त आनन्द (अनु), डॉ. आम्बेडकर के भाषण भाग–1 (डॉ. बी.आर. आम्बेडकर, सं– भगवानदास), दिल्ली, गौतम बुक सेंटर, 2019, मुद्रित
4. कौसल्यायन, डॉ. भदन्त आनन्द (अनु), भगवान बुद्ध और उनका धम्म, (डॉ. बी.आर. आम्बेडकर), नई दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2019, मुद्रित
5. पाण्डेय, डॉ. मैनेजर, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, पंचकूला, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, मुद्रित
6. Ambedkar R. The Untouchables: Who were they and why they became untouchables, Delhi, Samyak Prakashan printed, 2009.
7. Ambedkar BR. The riddles in Hinduism, Delhi, Siddharth Books, printed, 2019.
8. Ambedkar BR. Bhagwandas (edi), Thus Spoke Ambedkar (Part&1), Delhi, Gautam Books Centre, printed
9. Ambedkar BR. Buddha and his Dhamma, Delhi, Siddharth Books, printed, 2016.